हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

ISBN	:	**978-81-953548-4-9**
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	मनीष पब्लिकेशन्स 471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 मो. नं. 09968762953 email : manishpublications@gmail.com
प्रथम संस्करण	:	2021
मूल्य	:	₹ 650/-
शब्द संयोजक	:	मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली
आवरण	:	अमित
मुद्रक	:	पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Hindi Sahitya Mein Kinnar Vimarsh
Edited by Dr. Surendra Sharma

अनुक्रम

	दो शब्द	5
1.	पौराणिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ में किन्नर का अस्तित्व : एक विमर्श **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	11
2.	किन्नरों का अस्तित्व? **डॉ. वी. के. शर्मा**	21
3.	संस्कृत साहित्य में किन्नर चित्रण **डॉ. मुरारीलाल अग्रवाल**	27
4.	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में थर्डजेंडर **डॉ. ओम प्रकाश सैनी**	31
5.	हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श **डॉ. दायक राम**	41
6.	समकालीन उपन्यास और किन्नर विमर्श **डॉ. कविता यादव**	50
7.	अस्तित्व एवं सम्मान के लिए संघर्षरत किन्नर **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	54
8.	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श **दिनेश कुमार**	64
9.	किन्नर विमर्श : इतिहास से वर्तमान तक **डॉ. प्रवीण ठाकुर**	69
10.	किन्नर : समाज का परित्यक्तय वर्ग **डॉ. जगदीश कैंथला**	74
11.	समाज में उपेक्षित किन्नर वर्ग **डॉ. ममता**	83
12.	पोस्ट बॉक्स नं-203 नाला सोपारा : किन्नर जीवन की यथार्थ दास्तां **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	92

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में थर्डजेंडर

डॉ. ओम प्रकाश सैनी
(डी.लिट्), एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल, हरियाणा

'उनकी गालियों और तालियों /से भी उड़ते हैं/ खून के छींटे /और यह जो गाते-बजाते /उधम मचाते हर चौक-चौराहों पर /उठा देते हैं अपने /कपड़े ऊपर /दरअसल उनकी अभद्रता नहीं /उस ईश्वर से प्रतिशोध /लेने का उनका एक तरीका है, / जिसने उन्हें बनाया है /या फिर नहीं बनाया..../'[1]

विश्व के पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों में किन्नरों को लेकर अनेक कथाएं प्रचलित हैं। रामायण, महाभारत आदि पौराणिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों में किन्नर जीवन से जुड़े अनेक रोचक प्रसंग मिलते है। भाषा, साहित्य, और संस्कृति के संदर्भ में देखें तो किन्नरों के संदर्भ में अनेक उदाहरण मिथकीय कथाओं में उपलब्ध हैं। भारतीय शास्त्रों के अनुसार किन्नरों की पैदाइश अपने पूर्व जन्मों के गुनाहों के कारण ही होती है। ऐसा माना जाता है कि यक्ष और गंधर्वो की तरह नृत्य, गायन और वादन में निपुण यह प्रजाति भी देवताओं में विशेष सम्मान की अधिकारिणी थी। वर्तमान में किन्नर एक जाति का नाम भी है जो देवभूमि हिमालय के कन्नौर प्रदेश में (हिमवत और हेमकुटी) में रहती हैं जिनकी भाषा कन्नौरी है। हिंदू धर्म में पूजनीय ग्रंथ 'रामचरित मानस' में भी हिजड़ों (उर्दू शब्द) का उल्लेख मिलता है। 'मानस' में वनगमन के समय प्रजावासियों के अपार स्नेह को देख प्रभु राम ने समस्त नर-नारियों को लौट जाने को कहा। प्रभु राम के कहे अनुसार समस्त प्रजावासी वापस अपने घरों को लौट गए लेकिन किन्नर वहीं रह गए। प्रभु राम जब लंका विजय कर वापस लौटे तब सब किन्नरों को वहां पाकर इनके ना लौटने का कारण पूछा। किन्नरों ने कहा हे! प्रभु आपने तो समस्त नर-नारियों को लौटने का आदेश दिया था। हम न पुरुष हैं न नारी, जैसा की (किं + नर) से स्पष्ट है कि उनकी योनि और आकृति पूर्णतः मनुष्य की नही होती।

'जथा जोग करि विनय प्रनामा, विदा किए सब सानुज रामा।
नारी पुरुष लघु मध्य वडेरे, सब सनमानी कृपानिधि फेरे।।'

अयोध्या कांड 398/4